International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(V), January - March, 2024, pp. 58-61

हिन्दी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श

बुधेलिया पुजा के.*

प्रस्तावना

वृद्धावस्था की बात करने पर अक्सर प्रसिद्ध फ़्रांसिसी लेखक अनातोले फ्रांस का वह कथन याद आता है – 'काश ! बुढ़ापे के बाद जवानी आती।' अनातोले का वह कथन बड़ा ही सांकेतिक है – जवानी वह शारीरिक अवस्था है, जो जोश, उर्जा, शौर्य से ओत – प्रोत होती है, जिसके सहारा लेकर हर व्यक्ति अपने – अपने ढंग से जीवन – यापन तय करता है और इस क्रम में वह वृद्धावस्था तक पहुँचता है – बुजुर्ग वर्ग के पास जवानी वाली उर्जा शक्ति तो नहीं रह जाती, किन्तु रह जाता है विविध अनुभवों का भंडार। इन अनुभवों के आलोक में व्यक्ति को जवानी के अनुभव रहित जोश में किए गए अपने कई गलत निर्णयों और कार्यो का अहसास होता है, तो वह अनुताप की आंच में तपते हुए यह सोचता है कि अगर उसे बुढ़ापे में जवानी जैसी ताकत, स्फूर्ति मिल जाए तो वह पहले से बेहतर, श्रेयस्कर कार्य कर सकता है – यही आशय है अनातोले फ्रांस के इस कथन का – मूलतः बुढ़ापा जिसे आमतौर पर निष्क्रियता, शिथिलता की शारीरिक दशा समझकर बहुत काम की चीज नहीं समझा जाता, बचपन से लेकर जवानी तक के जीवन अनुभवों का भंडार होता है – ऐसा प्रकाशमय आलोक है जिसके सहारे से युवा पीढ़ी अपने वर्तमान को संवारते हुए भविष्य का शृंगार कर सकती है। यही कारण रहा है कि प्राच्य और पाश्चात्य दोनों परंपराओं में वृद्ध या वृद्धावस्था के प्रति सम्मानजनक भाव रहा है। इतिहास और साहित्य दोनों ही इस परंपरा के साक्षी हैं कि बुजुर्ग वर्ग के अनुभवों – सलाह, मशवारें से लाभ उठानेवाली, वृद्धों के दिखाये गये मार्ग पर चलनेवाली युवा पीढ़ी ही नव – निर्माण कर पाती है, जबकि इसके विपरीत मार्ग पर चलने वाली युवा शक्ति पतन की ओर ही जाती है। इसके प्रमाण स्वरूप हम महाभारत और रामायण की कथाओं को देख सकते हैं।

किन्तु आज आधुनिक होते जा रहे देश और शहर की चकाचौंध ने युवाधन को भटका दिया है। आज वह आपने नैतिक मूल्यों, बुजुर्ग वर्ग के प्रति मान – सन्मान आदि को भूलते जा रहे है। परिणाम स्वरूप आज हिन्दी साहित्य में वृद्धों की दशा और दिशा बदलने के लिए वृद्ध विमर्श का होना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में 'वसुधैवकुटुंबकम' की भावना धीरे – धीरे समाप्त हो रही है। परिणामस्वरूप पारिवारिक संवेदना गायब होती जा रही है। आधुनिकीकरण के कारण उभरा नया उच्च मध्यम वर्ग इस विमर्श के पालन – पोषणहार थे । जो उन्हें अब हाशिए पर भी धकेला जा रहा है। युवापीढ़ी या परिवार यह नहीं समझ रहा है कि वृद्धावस्था एक प्राकृतिक घटनाक्रम है जो सबको इसी अवस्था से गुजरना है। वैसे तो वृद्धावस्था जीवन का सत्य है इससे कोई भी बच नहीं सकता। संयुक्त परिवार अलग होने के कारण बुजुर्ग व्यक्ति पर विशेष ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाए है

• शोधार्थी छात्रा, शामलदास आर्ट्स कालेज, भावनगर, गुजरात।

The paper was presented in the National Multidisciplinary Conference organised by Maharani Shree Nandkuverba Mahila College, Bhavnagar, Gujarat on 21st January, 2024.

और ना ही उनकी समस्याओं को समझ रहे है। आधुनिक समय में आज की युवा पीढ़ी वृद्ध को बोझ समझ बैठी है। समाज में वृद्धों को उचित सम्मान नहीं मिलने के कारण वृद्धों का जीवन निराशा की ओर बढ़ रहा है। आज वृद्ध माता – पिता की संपत्ति, जमीन – जायदाद तो अच्छी लगती है लेकिन उनका पालन – पोषण करना नहीं चाहते। परिणामस्वरूप ही वृद्धाश्रम जैसी संस्था का उद्भव हुआ। पुत्र तथा पुत्रवधु वृद्ध माता – पिता के प्रति संवेदना और आदर भाव बिल्कुल नहीं रखते। इतना ही नहीं, उन्हें खुद के घर – परिवार से भी निकाल दिया जाता है। वृद्धावस्था विमर्श पारिवारिक संबंध और रिश्तों में आ रही गिरावट के कारण वृद्ध विमर्श को केन्द्र में रखकर कई साहित्यकारों ने कहानियों, उपन्यास, कविताएँ' लिखी। हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद, नागार्जुन, भीष्म साहनी, उषा प्रियंवदा, अमृतराय, चित्रा मुद्दगल, ममता कालिया, कृष्णा सोबती, काशीनाथ सिंह, पंकज बिश्ट, सूर्यबाला, दिलीप महेरा, नीरजा माधव आदि रचनाकारों ने भिन्न – भिन्न दृष्टिकोण से वृद्धों के जीवन की विभिन्न समस्याओं पर आधारित कहानियां, उपन्यासों लिखकर युवा पीढ़ी की संकीर्ण सोच को बेनकाब किया है।

'गिलिगड्डू' चित्रा जी का प्रसिद्ध एवम् बेहद संवेदनशील उपन्यास है। 'गिलिगड्डू' उपन्यास में वर्तमान युगीन बदलते मूल्यों के बीच वृद्धों के आंतरिक एवम् बाह्य जीवन की स्थितियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में डॉ. अर्चना मिश्रा का कथन उल्लेखनीय है – "गिलिगड्डू उपन्यास में चित्रा जी ने वृद्धों की बेचारगी, संवेदनशीलता और जीवन शैली को विस्तार दिया है। पुस्तक के फ्लैप पर लिखी इबारत भी इस उपन्यास की आधारभूमि की ओर संकेत किया गया है। गिलिगड्डू चित्रा जी का आकर में छोटा परंतु संवेदनशीलता में कही गहरा उपन्यास है। इस उपन्यास में सेवानिवृत्त बुजुर्ग की एक रेखीय कहानी नहीं, जीवन के रंग बहु आयामी रूपों में उभर कर आए हैं।"[1] वृद्धावस्था जिंदगी की वह विशेष अवस्था है जहाँ पहुंचकर मनुष्य जिन्दगी के बिखरे टुकड़ों को साथ जोड़कर फिर से तलाशने की या सवारने का प्रयत्न करता है।

प्रस्तुत उपन्यास में कर्नल स्वामी और बाबू जसवंत सिंह के टहलने के दृश्य से उपन्यास का प्रारंभ होता है। कानपुर से सेवानिवृत्त इंजिनियर बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी और मित्र की मृत्यु के बाद अकेले हो जाते है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वे दिल्ली में अपने बेटे और बहु सुनयना के पास रहने आते है। किन्तु वृद्ध ससुर के लिए बहु के ह्रदय में किसी भी प्रकार का स्थान नहीं था। यही स्थिति उनके पुत्र की थी। बीटा भी पिता के दिल्ली आ जाने से बहुत नाराज था। जसवंत सिंह को घर का कुत्ता टौमी को संभालने का कार्य मिल जाता है। इसी बिच टहलने के दौरान कर्नल स्वामी और जसवंत सिंह मिलते हैं और कुछ ही दिनों में दोनों पक्के दोस्त बन जाते है। दोनों बुजुर्ग है, सेवानिवृत्त है। वे जब भी मिलते थे तो अपने जीवन की व्यथा को एकदूसरे के साथ बयां करते रहते हैं। कर्नल स्वामी जसवंत सिंह को कहता है – "बाय दि वे, हमें विष्णु नारायण स्वामी कहते हैं – रिटायर्ड कर्नल स्वामी। नोएडा में रहता हूँ छब्बीस सेक्टर में घुमने आप की ओर ही आता हूँ।"[2]

बाबू जसवंत सिंह अपने परिवार के माहौल से मिलो पीड़ा को भुगतते हुए जी रहे हैं, जबकि कर्नल स्वामी एसी त्रासदी को सपने में परिवर्तित करके जी रहे हैं। वह सपना जो बुजुर्ग का होता है जो बहुत कम ऐसे नसीब वाले बुजुर्गों को मिलता है। कर्नल स्वामी को ऐसा महसूस होता है कि वे अपने परिवार में बहुत खुश है। बहुएँ उनकी बहुत सेवा कर रही है, अपने पोते पोतियों के बिना रह पाना उनके लिए कठिन है। पर यह सब उनका मात्र सपना था। असल जिंदगी की बात कुछ और ही थी।

चित्रा जी ने इस प्रकार नई पीढ़ी की स्वार्थी वृत्ति का वास्तविक चित्रण किया है। आजकल समाज में बहुएँ खुद के माता – पिता की सेवा की इच्छा अपनी भाभियों से रखती है पर खुद अपने ससुर की सेवा करना या घर में रखना नहीं चाहती। इसी प्रकार की स्वार्थ वृत्ति को लेकर बुजुर्गो को पीड़ित किया जाता है।

आज हमारे भारत के हर वृद्धों की यही स्थिति है, जैसी जसवंत सिंह की है। आज वृद्धों से बच्चों के रिश्ते सिर्फ नाम मात्र के हैं, उसमें आत्मीयता का अभाव है। निष्ठा और आस्था नाम का कोई गुण नहीं रहा, सिर्फ औपचारिकता निभाते है। वृद्ध माता – पिता से उन्हें कोई लगाव नहीं है, न चाहते हुए भी वृद्धो के साथ रहने की मज़बूरी मानते हैं। आज इसी कारण वृद्धाश्रमो की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। आज

बाजारवाद, यांत्रिक एवं तकनिकी के विकास के दौर में नई पीढ़ी न्यूक्लियर फैमिली में विभक्त होने से मानवीय मूल्यों को खो चुकी है। जसवंत सिंह की पीड़ा को लेकर लेखिका ने लिखा है – "बुद्धि विकास की आड़ में बड़ी खूबसूरती के साथ बच्चों को सम्वेदानायुक्त किया जा रहा है। इतना कि बच्चे कभी परिवार में न लौट सकें न कभी अपना परिवार गढ़ सके।"[3]

भूमंडलीकरण के दौर में हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ, मूल्यो, आदर्शो, मर्यादाओं में आमूलचूल परिवर्तन आया है। परिणाम स्वरुप हमारे भारतीय सामूहिक परिवारों में संवेदना आपसी सम्बन्ध टूटते हुए नजर आते है। आधुनिक काल के साहित्य में वृद्धों के प्रति परिवारो में उपेक्षाभरा रुख का सटीक चित्रण देखने मिलता है। हिंदी कथा साहित्य क्षेत्र में काशीनाथ सिंह जी ने अपनी विशिष्ट पहचान दर्ज की है। उनके सभी उपन्यास एक विशेष पहचान लिए हुए अदभूत है। वृद्ध विमर्श के तकाजे पर 'रेहन पर रग्धू' काशीनाथ सिंह का उपन्यास हमारी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, मूल्यों और आदर्शो के पतन की महागाथा है।

काशीनाथ सिंह गाँव, शहर व् भूमंडलीकरण के दौर में समग्र विश्व के साथ जुड़े हुए रचनाकार है। उनका अधिकतर समय गाँव में व्यतीत हुआ, इसलिए गाँव के अनुभवों को देखा है। रघुनाथ के चरित्र के माध्यम से ऐसा रेखांकन किया है उपन्यास में जो भविष्य के लिए खौफनाक स्थिति का डर पैदा करनेवाला है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों, कहानियों के माध्यम से भारतीय कृषक जीवन की बदहाली, पीड़ा, अभिव्यक्त की है। वहीँ परंपरा काशीनाथ सिंह जी ने हिंदी उपन्यास साहित्य में आगे बढ़ाई है। गाँव का एक साधारण व्यक्ति भूमंडलीकरण और भाजरवाद के चंगुल में कैसे फँस चुका है जिसका यथार्थ चित्रण 'रेहन पर रग्धू' उपन्यास में हुआ है।

पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति पर किस तरह से हावी हो रही है उसका यथार्थ चित्रण उपन्यास में हुआ है। पारिवारिक आपसी संबंधो, संयुक्त परिवारों की आत्मीय भावना का हास होना आदि का सफल चित्रण इस पन्यास का प्राण तत्व है। विज्ञान एवं तकनीकी दौर में आज सभी क्षेत्रो में जितनी ऊँचाइयों को हम प्राप्त तो कर रहे हैं किन्तु अपनी पारिवारिक रूपी जड़ो से उखड़ते जा रहे हैं। और आगे आनेवाली नयी पीढ़ीयों से जब भारतीय संयुक्त परिवार के प्रेम व् आदर्श की बात की जायेगी तो उसी प्रकार विश्वास नहीं करेंगे। जैसे महात्मा गांधी के बारे में आइन्स्टाइन ने कहा था कि – "भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड – मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी इस धरती पर आया था।"[4] रघुनाथ के परिवार में सभी सदस्यों की अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तड़प है।

भारतीय परिवारों में आदि काल से बड़े – बुजुर्गो का सम्मान होता रहा है। किन्तु आज के भूमंडलीकरण और आधुनिकता के परिवेश में एकल परिवार केन्द्रित समाज बुजुर्गो का सम्मान तो दूर, अपनों से ही विलग कर दिए गये हैं। हमारे भारतीय परंपरागत संस्कार भूलते जा रहे है। उपन्यास में रघुनाथ ने भी अपने बच्चों की सुख – सुविधा हेतु अपने आपको समर्पित कर दिया। जब सहारे की जरुरत पड़ी तो उनका साथ छोड़ दिया। उनकी पीड़ा और समकालीन सभी बारतीय समाज के बुजुर्गो की पीड़ा एक जैसी ही है। रग्धू के जीवन की हालत जैसी उन सभी भारतीय बुजुर्गों की दास्तान है जो अपनी जमीन से उखाड़े जा चुके हैं, और कहीं और जगह जम भी नहीं पाए हैं। आज के परिवारों में यह समस्या है कि जिस शहर में वह नौकरी करता है वहीँ स्थायी हो जाता हैद्य लौटकर अपने गाँव या अपने वतन जाना नहीं चाहता। अगर वह जाना भी चाहता है तो बच्चे नहीं आना चाहते। लेखक ने इस उपन्यास में पारिवारिक विघटन की समस्या उठायी है जो आज के समाज के डर किसी की है। 'रेहन पर रग्धू' उपन्यास आज के समाज में रग्धू जैसे व्यक्ति के अधिकाधिक अकेले हो जाने की गाथा है।

'समय – सरगम' कृष्णा सोबती का बहुत ही चर्चित उपन्यास है। यह केवल उपन्यास नहीं है बल्कि यह एक ऐसी झांकी है जो हर व्यक्ति के जीवन के सांध्य को दर्शाती है। यह जीवन की एक ऐसी अवस्था है जिससे एक न एक दिन हर व्यक्ति को होकर गुजरना पड़ता है। वृद्ध जीवन से जुड़ा यह उपन्यास हर उस वृद्ध की कहानी प्रस्तुत करता है जो जीवन के इस सांध्य में अकेला पड़ गया है। जीवन के इस मोड़ पर आकर जब

उसे प्यार, अघनत्व, लगाव की जरुरत हुती है, किसी के साथ की जरुरत होती है, किसी के सहारे की जरुरत होती है तब वह अकेला रह जाता है, मजबूरीवश उसे एकाकी जीवन जीना पड़ता है। बिना किसी सहारे के अकेले जीवन जीते हुए उसे जिन – जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है वह इस उपन्यास में स्पष्ट नजर आता है।

उपन्यास की नायिका आरण्या एक सशक्त नारी है। वह शिक्षित, आधुनिक तथा स्वावलंबी नारी है। वह एक वृद्ध स्त्री है लेकिन जितनी वृद्ध है उतनी ही जिंदादिली भी है। वह हर परिस्थिति में जीवन जीना जानती है। उसका चरित्र आत्मविश्वास से परिपूर्ण हैं। वह अपनी हर बात स्पष्ट रूप से सबके समक्ष रखती है तथा अपनी साथी स्त्रियों को भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत करती है। यहाँ अरण्या सिर्फ स्वयं को साबित नहीं करती बल्कि वह समाज के हर उस बुजुर्ग के लिए एक उदाहरण बनती है जो जीवन के इस अंतिम बेला में स्वयं को अकेला और निराश हो जीवन जीना छोड़ देते हैं या फिर किसी अनजाने से भय में जीवन जीने लगते है। अरण्या जीवन के हर पल को जिन्दादिली एवं स्वतंत्र होकर जीना चाहती हैं – "आरण्य पार्क के बाई और बढ़ गई। ... संझाती धुप में पार्क दिख रहा है किसी छवि – संग्रह जैसा।... हवा की चक्की धीरे – धीरे घूम रही है।... घास की नन्ही – मुन्नी पत्तियां हवा में हिलोरे लेने लगी। आरण्या तेज – तेज कदमो से लगभग दौड़ने लगी। ... आरण्या को दौड़ते देख कुछ टहलती आँखें अचरज से देखने लगी। इस उम्र में यह रफ़्तार। चाल अपने आप धीमी हो गई।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उपन्यास के लगभग सभी पात्र जीवन के अंतिम दौर से गुजर रहे हैं। किन्तु समय – सरगम उपन्यास की आरण्या ही एक ऐसा पात्र है जो वृद्धावस्था की कठिनाइयों को तथा मृत्यु भय को भुलाकर, अपने बुढ़ापे की सीमाओं को लांधकर जीवन का भरपूर आनंद लेती है। हिन्दी साहित्य के उपन्यासों में वृद्धावस्था का यह जिंदादिल स्वरुप केवल समय – सरगम में ही देखने को मिलता है। इसके अलावा सभी जगह वृद्ध जीवन की त्रासदी, अकेलापन, संताप को ही केन्द्र में लिया गया है। किन्तु इन उपन्यासों से गुजरते हुए यह भी पता चल जाता है कि सभी वृद्धजन का दिल – दिमाग आरण्या जैसा नहीं होता। क्यूंकि जब प्रेम, लगाव, आत्मीयता की अपेक्षा के बदले रूखापन, अपमान मिलता रहे तो फिर जीवन का आनंद कोई नहीं ले सकता। यह बात हमें काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'रेहन पर रग्धू' में मिल जाती है। तो दूसरी और चित्रा जी का 'गिलिगड्ड' उपन्यास है जिसमें वृद्धगण केवल सन्मान, प्रेम, आदर – भाव मिलने के सपने में ही रहते है। वास्तविकता कुछ और ही है। जो गिलिगड्ड में दिखाया गया है। अतः वृद्धजनों की दशा – दिशा हमें हिन्दी उपन्यासों के जरिए बखूबी जानने को मिल जाती है। मूलतः कहा जा सकता है कि आज संबंधों की कड़ी बहुत ढीली पड़ती जा रही है : मुख्यतः वृद्ध समाज के संदर्भ में।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चित्रा मुद्दगल के कथा साहित्य युग चिंतन, पृ. 36
2. गिलिगड्ड, चित्रा मुद्दगल, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 11002, पृ. 14
3. वही, पृ. 34
4. समय सरगम, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, संस्करण – 2000, पृ. 11

❖◆❖